श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

किरंतन

राग श्री मारू

पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो।
बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साधो! पहले आप पारब्रह्म की पहचान करो, क्योंकि बिना पारब्रह्म की पहचान किए कौन कह सकता है कि मैं कौन हूं? ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि या जीवसृष्टि में से कौन हूं और मेरा पारब्रह्म से क्या नाता है? धनी का, महाप्रभु का या वह मेरा प्रभु है।

पीछे ढूंढ़ो घर आपनों, कौन ठौर ठेहेरानो।
जब लग घर पावत नहीं अपनों, सो भटकत फिरत भरमानो।। २ ।।

पारब्रह्म की पहचान कर लेने के बाद अपने मूल घर को खोजो कि वह कौन सा ठिकाना है जहां से मैं आया हूं? अर्थात् परमधाम से, अक्षर से या बैकुण्ठ निराकार से—कहां से आया हूं? जब तक अपने घर की सुध नहीं आ जाती तब तक संशय में भटकते ही रहोगे।

पांच तत्व मिल मोहोल रच्यो है, सो अंत्रीख क्यों अटकानो।
याके आस पास अटकाव नहीं, तुम जाग के संसे भानो।। ३ ।।

यह ब्रह्माण्ड पांच तत्व—जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश से बना है। यह अधर में कैसे खड़ा है क्योंकि इसके आस-पास टिकने का कोई सहारा नहीं है, इसलिए तुम विचार करके इस संशय को मिटाओ।

नींद उड़ाए जब चीन्होंगे आपको, तब जानोगे मोहोल यों रचानो।
तब आपै घर पाओगे अपनों, देखोगे अलख लखानो।। ४ ।।

अज्ञानता को छोड़कर जब पारब्रह्म की पहचान कर लोगे तब तुम्हें पता चलेगा कि यह ब्रह्माण्ड किस तरह से बना है और उसके बाद तुम स्वयं अपने घर को प्राप्त कर लोगे। उस पारब्रह्म को जिसे आज दिन तक किसी ने देखा नहीं है उसे तुम देख लोगे।

बोले चाले पर कोई न पेहेचाने, परखत नहीं परखानों।
महामत कहे माहें पार खोजोगे, तब जाए आप ओलखानो।। ५ ।।

आपस में केवल वार्तालाप करने से किसी को पारब्रह्म की पहचान नहीं हुई और न ही कोई उसे परख पाता है। श्री महामतिजी कहते हैं कि जब उस पारब्रह्म को इस ब्रह्माण्ड से बाहर निकल कर अंतरात्मा से खोजोगे तब कहीं उस पारब्रह्म की पहचान आपको होगी।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ५ ।।

Nijanand App